शिव रात्रि महोत्सव

शिवरात्रि पर्व मनुष्यात्माओं के लिए परम सौभाग्य एवं महत्वपूर्ण दिन है। इसी दिन परमपिता परमात्मा शिव संसार के कल्याणार्थ, अति धर्मग्लानि के समय जब इस संसार पर अज्ञान रात्रि छायी होती है कल्प के संगम समय पर अवतरित हो सृष्टि को ज्ञान देते हैं। और इस तमोप्रधान आसुरी और अज्ञान रूपी रात्रि से ढंकी हुई सृष्टि का विनाश कर ज्ञानसूर्य से इस अंधकार के आवरण को मिटाकर अटल, अखंड़, सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, सुख शान्तियम, सतयुगी देवी-देवता धर्म की पुनः स्थापना कर दैवी सृष्टि की रचना करते हैं।

शिव पूजा की व्यापकता -

देवी-देवता धर्म के अनुयाइयों के लिए तो शिवरात्रि अत्याधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि परमपिता परमात्मा शिव जो सारा सृष्टि का बीज रूप है विश्व कल्याणार्थ इस भारत की पावन भूमि पर ही अवतरित होते हैं। अब शिव तो अव्यक्तमूर्त, उस अव्यक्तमूर्त ज्योर्तिलिंगम परमात्मा शिव को इस व्यक्त अथवा साकार प्रकृतिकृत जगत के कल्याणार्थ अलौकिक और दिव्य कृत्य करने के लिए व्यक्त और सूक्ष्म रूप भी धारण करने पड़ते हैं। परमपिता त्रिमूर्ति शिव की ज्योर्तिलिंगम स्वरूप की पूजा शिवलिंग के रूप में भारत में ही नहीं बल्कि देश-देशान्तरों में आज भी नाम और रिती भेद से होती है। विश्व भर में अब भी ऐसी स्मारक अथवा खण्ड़हर मिलते हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि भारत के अतिरिक्त अन्य देश-देशान्तरों में भी किसी न किसी समय इस लिंग की पूजा प्रचलित थी।

शिव क्या है?

वास्तव में शिव अव्यक्त परमपिता परमात्मा का नाम है और लिंग का अर्थ योगिक भाषा में योग का साधन है। लिंग का अर्थ प्रतीक अथवा प्रतिमा भी है। अव्यक्त का अर्थ यह नही कि परमात्मा का कोई रूप अथवा आकार नहीं, परमात्मा ज्योर्तिलिंगम रूप करो़ड़ो सूर्य से भी अधिक दैदित्यमान सुनहरे प्रकाश वाला, सृष्टि का बीजरूप, परम तेजोमय, सच्चीदानन्द, इस आकाशतत्व से पार अखण्ड़ ज्योति महातत्व जिसे ब्रह्माण्ड़ अथवा निर्वाणधाम भी कहते हैं, वहाँ निवास करता हैं। और यह अव्यक्त ज्योर्तिलिंगम परमात्मा शिव ही ब्रह्मा, विष्णु और शंकर तीन रूप की रचना कर दैवी सृष्टि की स्थापना, पालना और आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं।

शिव और शंकर में अन्तर और शिवलिंग की स्थापना का कारण -

इस गुह्य रहस्य को न जानने के कारण लोगों ने शिव और शंकर को एक ही समझ लिया है। शिवलिंग का वास्तविक रहस्य को न जानने के करण प्रायः जन साधारण में भ्रान्तियां फैल रही है। संसार के विभिन्न देशों तथा धर्म वाले इस लिंग की इतनी पूजा व प्रतिष्ठा करते रहे हैं तो स्पष्ट है कि यह किसी ऐसी महान् सत्ता की ही प्रतिमा होगी जो सबके लिए पूज्य हो वह उसी निराकार अव्यक्त ज्योर्तिलिंगम् बीज रूप त्रिमूर्ति परमात्मा का प्रतिक है। प्रारम्भ में जब शिवलिंग की पूजा प्रारम्भ हुई तो भक्तजनों को इस मूर्ति का वास्तविक ज्ञान अवश्य था। अपने मन को एकाग्र कर परमपिता परमात्मा का रूप का चिन्तन-किर्तन करने के लिए सर्वप्रथम राजा विक्रमादित्य सोमनाथ के मंदिर में एक अति अमूल्य हीरे का लिंग बनाकर शिव की पूजा को

प्रचलित किया। योगिक भाषा में लिंग का अर्थ योग अथवा मन को रोकने का साधन। लिंग का अर्थ प्रतिमा अथवा मूर्ति भी है। अतः अव्यक्त मूर्ति परमपिता परमात्मा शिव (ज्योर्तिलिंगम स्वरूप) का ध्यान धर मन की चंचल गति को रोकने के लिए ही पहले शिवलिंग की स्थापना हुई थी।

शिवलिंग से शिव का पूर्ण परिचय -

शिवलिंग पर तीन अर्ध चन्द्रमा भी सार्थक है जहां शिवलिंग परमाम पिता परमात्मा के निराकारी रूप की प्रतिमा है वहां तीन अर्ध चन्द्रमा परमात्मा के गुण व दिव्य कर्तव्यों के बोधक इस रहस्य के संकेतक है कि यह अव्यक्त परमपिता परमात्मा शिव -

1. शत-चित्त-आनन्द स्वरूप हैं।
2. सतो, रजो, तमो, त्रिगुणी माया अथवा प्रकृति का पति परम पुरूष हैं।
3. वह साकार, आकार, तथा निराकार तीनों लोकों का स्वामी त्रिलोकीनाथ हैं।
4. वह ब्रह्मा, विष्णु और शंकर तीनों देवताओं के भी रचयीता हैं।
5. वह साकार सृष्टि में ब्रह्मा द्वारा देवी-देवता धर्म की स्थापना, विष्णु अथवा श्री लक्ष्मी-नारायण के युगल रूप द्वारा देवी-देवता धर्म की पालना तथा शंकर द्वारा आसुरी सृष्टि का विनाश करातें हैं।
6. वह आदि, मध्य, अंत अथवा भूत, भविष्य तथा वर्तमान को जानने वाला त्रिकालदर्शी है।

आज उसी परमपिता त्रिमूर्ति परमात्मा शिव का दिन है जो कि हम सब आत्माओं का पिता, गुरू, व सद्गतिदाता हैं। आज जब समस्त सृष्टि पर घोर अंधकार छाया हुआ है, मनुष्यों की बुद्धि तमोप्रधान है, विनाश की ज्वाला धधक रही है, ऐसे समय में हम समस्त संसार के प्राणी धर्म, जाति, राष्ट्र के भेद को महत्व न देकर आज शिवरात्रि के दिन उस परमपिता शिव का आह्वान करें और योग लगायें जिससे कि वे तमस को शान्ति में, अज्ञान को ज्ञान में और अंधकार को प्रकाश में रूपान्तरित कर हम सबको सुख व शान्ति की वर्षा देवें।

ओम् शान्ति

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com